

पिछले अध्याय में मैंने कहा था कि मरकुस की पुस्तक को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है:

1. 1:1-13 - यीशु का दिव्य मसीहा के रूप में परिचय।
2. 1:14-8:26 - यीशु अपनी शिक्षाओं और चमत्कारों के माध्यम से अपनी दिव्यता सिद्ध करते हैं।
3. 8:27- 16:20 - यीशु अपनी मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के माध्यम से अपनी दिव्यता सिद्ध करते हैं।

एक सरल, स्पष्ट पुस्तक, जिसका एकमात्र उद्देश्य यीशु को परमेश्वर के दैवीय पुत्र के रूप में प्रस्तुत करना है और पाठक को इस सत्य के आधार पर एक निर्णय के साथ छोड़ना है।

यीशु का परिचय — 1:1-13

यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के शुभ संदेश का प्रारम्भ है।

- मरकुस 1:1

लेखक एक प्रस्तावना के साथ शुरू करता है, वह बात जिसे सिद्ध किया जाना है, कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं।

² भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में लिखा है कि:

“सुन! मैं अपने दूत को तुझसे पहले भेज रहा हूँ।
वह तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।”

³ “जंगल में किसी पुकारने वाले का शब्द सुनाई दे रहा है:

‘प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो।
और उसके लिये राहें सीधी बनाओ।’”

- मरकुस 1:2-3

पुराने नियम के साथ संबंध संक्षिप्त है, मत्ती के प्रस्तावना की तरह नहीं जिसमें यीशु की वंशावली अब्राहम से लेकर उनके सांसारिक पिता, यूसुफ तक दी गई है। मरकुस केवल यह बताता है कि यह यीशु वही मसीहा है जिसकी भविष्यवाणी पुराने यहूदी भविष्यद्वक्ताओं ने की थी।

ये पद पाठक को यह समझने में मदद करते हैं कि यह यीशु कौन है और कहाँ से आता है। पुराने नियम में, नबी वे थे जिन्होंने लोगों को तैयार करने के लिए उनके आने की बात कही और प्रचार किया।

⁴ यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा देते आया था। उसने लोगों से पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा लेने को कहा। ⁵ फिर समूचे यहूदिया देश के और यरूशलेम के लोग उसके पास गये और उस ने यर्डन नदी में उन्हें बपतिस्मा दिया। क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये थे।

⁶ यूहन्ना ऊँट के बालों के बने वस्त्र पहनता था और कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाया करता था।

- मरकुस 1:4-6

वह इन पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को उनकी अपनी पीढ़ी के एक व्यक्ति से जोड़ता है, एक ऐसा व्यक्ति जिसके बारे में उन्होंने सुना होगा, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला। भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था कि मसीह के आने से पहले एक ऐसा व्यक्ति आएगा जो उसके आने की घोषणा करेगा। मरकुस कहता है कि यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आया और प्रचार करने लगा। वह पुराने रेगिस्तान के भविष्यद्वक्ताओं की तरह कपड़े पहनता था, वह रेगिस्तान में रहता और काम करता था, और मसीह और उसके राज्य के आने के लिए पश्चाताप और तैयारी का संदेश देता था।

⁷ वह इस बात का प्रचार करता था: “मेरे बाद मुझसे अधिक शक्तिशाली एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों के बन्ध तक खोल सकूँ। ⁸ मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह पवित्र आत्मा से तुम्हें बपतिस्मा देगा।”

- मरकुस 1:7-8

ईश्वर ने सभी को क्षमा की पेशकश की जिन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मा को स्वीकार किया क्योंकि बपतिस्मा देने वाले के संदेश का उत्तर देते हुए, लोग विश्वास के द्वारा उस उद्धारक कार्य की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसे यीशु ने उनके लिए अपने क्रूस के द्वारा पूरा करने के लिए आए थे। एक परिचित वाक्यांश का उपयोग करते हुए, यूहन्ना के बपतिस्मा को स्वीकार करते समय वे अपने पापों को क्षमा के लिए क्रूस की ओर भेज रहे थे।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा कि जब यीशु आएंगे तो वे अन्य आशीर्ष देंगे जो जल बपतिस्मा के द्वारा नहीं बल्कि पवित्र आत्मा के माध्यम से दी जाएंगी। बाद में पेंटेकोस्ट पर, पतरस प्रचार करेगा कि क्षमा और पवित्र आत्मा का उपहार (जो हर विश्वासी के भीतर वास करता है) दोनों जल बपतिस्मा के द्वारा प्राप्त होंगे (प्रेरितों के काम 2:38). हालांकि, पाप पर विजय पाने की शक्ति (रोमियों 8:13), चमत्कार करने की शक्ति (प्रेरितों के काम 19:6), सेवा करने की शक्ति (1 कुरिन्थियों 12:11), और पुनर्जीवित होकर अनंत जीवन पाने की शक्ति (रोमियों 8:11), ये सभी हमें पवित्र आत्मा के द्वारा दी जाती हैं।

यीशु हमें पवित्र आत्मा से खतना (बपतिस्मा) करते हैं, वचन का प्रचार करके (यूहन्ना 6:63), उन्हें हमारे भीतर रहने के लिए भेजकर (प्रेरितों के काम 2:38), और हमें उनके साथ मुहरबंद करके (हमारी प्रामाणिकता की गारंटी के लिए) (इफिसियों 1:13)।

⁹ उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील आया और यर्डन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। ¹⁰ जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश को खुले हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप में आत्मा उस पर उतर रहा है।

- मरकुस 1:9-10

यीशु का बपतिस्मा क्यों हुआ?

¹³ उस समय यीशु गलील से चल कर यर्डन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। ¹⁴ किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, “मुझे तो स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?”

¹⁵ उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।” फिर उसने वैसा ही होने दिया।

- मत्ती 3:13-15

यूहन्ना को उन सभी को बपतिस्मा देना था जो परमेश्वर के राज्य के लिए तैयारी कर रहे थे। यह क्रिया उनके विश्वास और पाप से अस्वीकार करने की गवाही थी। यीशु इस संसार में प्रवेश कर रहे थे ताकि वे अपना राज्य स्थापित कर सकें। उनका बपतिस्मा उनके अपने विश्वास की गवाही थी जो राज्य से जुड़ा था। हालांकि, यह पाप से अलगाव या अस्वीकार नहीं था क्योंकि उनमें कोई पाप नहीं था। उनका बपतिस्मा उनके परिवार और संसार से अलगाव का प्रतीक था ताकि वे पूरी निष्ठा से अपनी सेवा को आगे बढ़ा सकें। यीशु का बपतिस्मा उनकी सार्वजनिक सेवा की शुरुआत और निजी जीवन का अंत दर्शाता है। उनका बपतिस्मा यूहन्ना के हर बपतिस्मा को वैधता और आशीर्वाद प्रदान करता है।

फिर आकाशवाणी हुई: “तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हूँ।”

- मरकुस 1:11

यूहन्ना ने यीशु की ओर इशारा किया जो कहा गया था, जो आने वाला था। अब परमेश्वरत्व इस बात का साक्षी है क्योंकि यहाँ तीनों प्रस्तुत हैं:

1. पिता बोलते हैं - "प्रिय" क्योंकि वह कौन हैं, वह क्या करेंगे और इसका दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।
2. पुत्र मसीह बने हैं, वह यीशु के रूप में दिखाई देते हैं।
3. पवित्र आत्मा एक कबूतर के रूप में प्रकट होते हैं।

यह बाइबल में केवल एक बार है जब तीनों एक साथ और एक ही स्थान पर प्रकट होते हैं।

¹² फिर आत्मा ने उसे तत्काल बियाबान जंगल में भेज दिया। ¹³ जहाँ चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा लेता रहा। वह जंगली जानवरों के साथ रहा और स्वर्गदूत ने उसकी सेवा करते रहे।

- मरकुस 1:12-13a

यीशु के मरुभूमि में प्रलोभन के संबंध में, मत्ती (मत्ती 4:1) हमें बताता है कि यीशु को आत्मा द्वारा 40 दिन और रातों तक मरुभूमि में ले जाया गया ताकि शैतान द्वारा प्रलोभित किया जा सके। लूका (लूका 4:1-2) कहता है कि वहाँ वे लगातार प्रलोभित होते रहे। जंगली जानवर बुरे आत्मा होंगे।

शब्द "प्रलोभित करना" का अर्थ है परखना या जांचना, केवल बहकाना नहीं। शैतान ने यीशु को पाप के संबंध में परखा। यीशु, परमेश्वर के पुत्र, पाप का विरोध करने में असफल नहीं हो सकते थे, लेकिन उन्हें उस परीक्षा के साथ होने वाले दुख को अनुभव करना पड़ा। उन्हें उसी तरह परखा गया/जांच किया गया जैसे हम हैं (इब्रानियों 4:15).

शारीरिक परीक्षण:

- रेगिस्तान में चालीस दिन और रातें
- भूख और कमजोरी
- एकाकीपन
- जंगली जानवर

नैतिक परीक्षा:

- शैतान के साथ सामना

इस घटना के बारे में एक प्रश्न उठता है, "यदि यीशु असफल नहीं हो सकते थे, तो फिर परीक्षा क्यों?" हिब्रू पुस्तक के लेखक इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि हमारे महायाजक या हमारे मध्यस्थ बनने के लिए, यीशु को मानव परीक्षाओं और दुखों का अनुभव करना आवश्यक था, जिनमें से एक था उनकी मरुभूमि में परीक्षा (इब्रानियों 4:14-16). उनकी मानवीय अनुभवों के कारण, यीशु तब मनुष्य के लिए परमेश्वर के सामने पूर्ण प्रतिनिधि हो सकते थे। अपनी दैवी प्रकृति के कारण, वे परमेश्वर के सामने आ सकते थे; अपनी पापरहितता के कारण, वे एक पूर्ण बलिदान दे सकते थे; अपनी मानवीय अनुभवों के कारण, वे मनुष्यों की समस्याओं के साथ पूर्ण सहानुभूति रख सकते थे।

परीक्षा का उद्देश्य यह साबित करना नहीं था कि वह पास हो सकता है, परीक्षा का उद्देश्य यह था कि वह परीक्षा का अनुभव कर सके ताकि वह कमजोर मनुष्यों का प्रतिनिधित्व कर सके और उनके साथ सहानुभूति रख सके जो समान परीक्षाओं का सामना करते हैं।

जहाँ चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा लेता रहा। वह जंगली जानवरों के साथ रहा और स्वर्गदूत ने उसकी सेवा करते रहे।

- मरकुस 1:13b

परीक्षा के बाद परमेश्वर ने उसकी सेवा की:

- भोजन - उसने इस अनुभव के शारीरिक प्रभावों को सहा।
- स्वर्गदूत - उसने भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी पीड़ा सहनी पड़ी और ऐसे अन्य प्राणियों की संगति की आवश्यकता थी जो उसकी द्वैत प्रकृति और उस परीक्षा को समझते थे जिससे वह अभी गुजरा था। इस समय कोई भी मानव ऐसा आराम प्रदान नहीं कर सकता था।

यीशु का प्रलोभन हमारे ईसाई जीवन में कई अच्छे सबक प्रदान करता है:

- हम विशेष रूप से आध्यात्मिक/शारीरिक/भावनात्मक चरम के बाद कमजोर होते हैं। यीशु का बपतिस्मा उनके जीवन में एक चरम था और प्रलोभन तुरंत उसके बाद आए। हमें याद रखना चाहिए कि गर्व हमेशा महान सफलता के बाद आने वाला खतरा होता है।
- हम तब भी प्रलोभन के प्रति कमजोर होते हैं जब हम बीमार, थके हुए और कष्ट में होते हैं, जैसे कि यीशु उपवास के कारण कमजोर होने के बाद थे। ध्यान दें कि शैतान ने अपनी सबसे शक्तिशाली आक्रमण उपवास के अंत में किया जब वह सबसे कमजोर था, शुरुआत में नहीं।
- जब परीक्षा हो, हमें तुरंत परमेश्वर और उसके वचन पर सहायता और सुरक्षा के लिए भरोसा करना चाहिए। हमें केवल अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:13)। यदि हम पूछें तो यीशु बच निकलने का मार्ग प्रदान करेंगे।
- यीशु अपने मंत्रालय के लिए परीक्षा और परख के माध्यम से तैयार हुए, और हम भी। जब चीजें हमारी इच्छा के अनुसार न हों तो हमें क्रोधित, अधीर या निराश नहीं होना चाहिए। हमें जीवन की परीक्षाओं को अपना कार्य करने का समय देना चाहिए ताकि वे हमें मसीह में पूर्ण बनने में मदद करें। कई बार विश्वास की गुणवत्ता दिखाने के लिए परीक्षाओं से गुजरना आवश्यक होता है (1 पतरस 1:6-7)।
- यदि आप उस पर भरोसा करें तो परमेश्वर परीक्षा के दौरान और बाद में आपकी व्यवस्था करेगा (1 पतरस 5:8)।

मार्क ने केवल कुछ पदों के साथ यीशु का परिचय देते हुए शुरू किया और तुरंत उन्हें एक दैवीय प्राणी के रूप में स्थापित किया:

1. वह भविष्यवाणी के अनुसार आता है।

2. उसके बपतिस्मा में उसकी पहचान का एक अलौकिक चिन्ह होता है।
3. मरुभूमि में वह पाप और शैतान पर अपनी शक्ति प्रदर्शित करता है।
4. वह सेवा प्राप्त करता है और स्वर्गदूतों के साथ संवाद करता है।

इस बिंदु पर पाठक के मन में कोई संदेह नहीं है कि मरकुस यीशु के बारे में क्या कह रहा है: वह दैवीय है।

यीशु की दिव्यता चमत्कारों और शिक्षाओं के माध्यम से प्रमाणित

यीशु अपनी दैवीय अधिकार स्थापित करते हैं जब वे मनुष्य के उद्धार का समय और शर्तें घोषित करते हैं।

आखिरकार, यह करने का अधिकार किसके पास हो सकता है यदि भगवान के पास न हो?

¹⁴ यूहन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु गलील आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने लगा। ¹⁵ उसने कहा, “समय पूरा हो चुका है। परमेश्वर का राज्य आ रहा है। मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।”

- मरकुस 1:14-15

यूहन्ना ने प्रचार किया, “तैयार हो जाओ, समय आ रहा है।” यीशु ने प्रचार किया, “समय अब है।” “पूरा हुआ” शब्द का अर्थ है एक कप जो पूरी तरह भरा हो। यीशु अपनी सार्वजनिक प्रचार सेवा की शुरुआत करते हैं जब यूहन्ना को गिरफ्तार किया जाता है।

उसके संदेश का मूल था, “ईश्वर का राज्य अब आ गया है, उद्धार पास है।” उस समय उसके और उसके संदेश के प्रति प्रतिक्रिया: विश्वास (पद 15), पश्चाताप (पद 15), बपतिस्मा (यूहन्ना 4:1-2)।

आज, संदेश अधिक पूर्ण और अधिक विवरणों के साथ है, लेकिन मूल रूप से वही है, “अब वह समय है जब आप बचाए जा सकते हैं।” प्रतिक्रिया भी मूल रूप से समान है: विश्वास (मरकुस 16:16), पश्चाताप (प्रेरितों 2:38), बपतिस्मा (प्रेरितों 2:38)।

यीशु अपनी अधिकारिता की पुष्टि करते हैं यह घोषणा करके कि उद्धार निकट है, और उस उद्धार को प्राप्त करने के लिए उचित प्रतिक्रिया स्थापित करके (विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा)।

¹⁶ जब यीशु गलील झील के किनारे से हो कर जा रहा था उसने शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास को देखा। क्योंकि वे मछुवारे थे इसलिए झील में जाल डाल रहे थे। ¹⁷ यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुवारे बनाऊँगा।” ¹⁸ उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे चल पड़े।

¹⁹ फिर थोड़ा आगे बढ़ कर यीशु ने जब्दी के बेटे याकूब और उसके भाई यूहन्ना को देखा। वे अपनी

नाव में जालों की मरम्मत कर रहे थे।²⁰ उसने उन्हें तुरंत बुलाया। सो वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़ कर उसके पीछे चल पड़े।

- मरकुस 1:16-20

याद रखें, मार्क पतरस की यीशु के साथ अपने जीवन की यादों को रिकॉर्ड कर रहा है। यहाँ वह संक्षेप में अपने और अपने भाई के बुलावे का वर्णन करता है, साथ ही अन्य स्थानीय मछुआरों का भी, जिन्हें प्रभु ने बुलाया था। यीशु का बुलावा विभिन्न चरणों में था। हम इसे पतरस के अनुभव में देखते हैं। जो मार्क वर्णन करता है वह पतरस का प्रभु के साथ पहला संपर्क नहीं था। यीशु के बुलावे में विभिन्न चरण थे:

1. शिष्यों को सामान्य बुलावा (यूहन्ना 1:35-42) उसका पहला संपर्क यीशु से तब हुआ जब वह और उसका भाई यूहन्ना के शिष्य थे।
2. यीशु उन्हें व्यक्तिगत रूप से सिखाना शुरू करता है, अपने पहले शिष्यों को।

यीशु उसे विशिष्ट सेवा के लिए बुलाता है (मरकुस 1:17)

1. क्रिया "अनुसरण करना" का अर्थ है निकटता से अनुसरण करना, खोजने की इच्छा के साथ; खोज करना।
2. पहले वह शिक्षा और उपदेश पाने के लिए अनुसरण करता था, अब वह पतरस को उसे खोजने, यह पता लगाने के लिए आमंत्रित करता है कि वह वास्तव में कौन है।
3. यीशु कौन है (दैवीय) यह खोजने और जानने में, वह "मनुष्यों का मछुआरा" बन जाएगा। पतरस और अन्य लोग यीशु की देवता के बारे में दूसरों को बताना चाहेंगे, और उन्होंने बताया।

यीशु अपने बुलावे की पुष्टि करता है (लूका 5:1-11)

1. यीशु पतरस की अपनी नाव में एक चमत्कार करता है और इससे यीशु की देवता में विश्वास का स्वीकार होता है (उसे प्रभु कहता है)।
2. इस समय वे केवल अपनी नावें नहीं छोड़ते, वे सब कुछ छोड़कर उसका अनुसरण करते हैं।

कुछ लोग यीशु का अनुसरण इसलिए करते हैं क्योंकि उनकी शिक्षाएँ अच्छी हैं, अन्य लोग इसलिए अनुसरण करते हैं क्योंकि वे अनुयायी हैं और यीशु दूसरों से उतने ही अच्छे या बेहतर नेता हैं। प्रेरित और उनके बाद के सभी शिष्य यीशु का अनुसरण इसलिए करते हैं क्योंकि वे विश्वास कर चुके हैं कि वह परमेश्वर का दिव्य पुत्र है जिसके पास शक्ति है।

यहाँ हम उस अनुभाग की शुरुआत करते हैं जहाँ यीशु अपनी दिव्यता को शिक्षाओं और चमत्कारों की एक श्रृंखला के माध्यम से प्रदर्शित करेंगे। मार्क अपने वर्णन में यीशु के जीवन के इन दोनों पहलुओं के बीच वैकल्पिक रूप से चलता है।

²¹ और कफरनहूम पहुँचे। फिर अगले सब्ब के दिन यीशु आराधनालय में गया और लोगों को उपदेश देने लगा। ²² उसके उपदेशों पर लोग चकित हुए। क्योंकि वह उन्हें किसी शास्त्र ज्ञाता की तरह नहीं बल्कि एक अधिकारी की तरह उपदेश दे रहा था।

- मरकुस 1:21-22

सिनागॉग में उनकी शिक्षा मूल रूप से पद 15 में निहित सामग्री थी। मरकुस उनकी प्रतिक्रिया दर्ज करता है: आश्चर्यचकित, जिसका अर्थ है किसी असाधारण या अप्रत्याशित चीज़ से प्रभावित होना। यह हमेशा उनकी शिक्षा का प्रभाव था (मत्ती 7:28, पर्वत पर उपदेश; यूहन्ना 7:46, सैनिक उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सके क्योंकि वे आश्चर्यचकित थे)।

वे उसके अंदाज या प्रस्तुति से आश्चर्यचकित नहीं थे, वे उसके विषयवस्तु से आश्चर्यचकित थे और कि वह अधिकार की शक्ति के साथ पढ़ाता था (वह जानता था कि वह क्या कह रहा है)। रब्बियों की शैली यह थी कि वे अपने तर्क को साबित करने के लिए अन्य रब्बियों के उद्धरण देते हुए बहस करते थे (जैसे कि क्या वास्तव में शब्बाथ पर दो लकड़ियाँ ले जाना पाप है)। यीशु ने उच्चतर, गहरे और सच्चे ज्ञान प्रस्तुत किए और इस प्रकार शक्ति और अधिकार के साथ बोले।

चमत्कार — 1:23-45

शक्तिशाली शिक्षा के बाद अब पाँच शक्तिशाली चमत्कारों का प्रदर्शन होता है।

एक अशुद्ध आत्मा को निकालना

²³ उनकी यहूदी आराधनालय में संयोग से एक ऐसा व्यक्ति भी था जिसमें कोई दुष्टात्मा समायी थी। वह चिल्ला कर बोला, ²⁴ “नासरत के यीशु! तुझे हम से क्या चाहिये? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है।”

²⁵ इस पर यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, “चुप रह! और इसमें से बाहर निकल!” ²⁶ दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को झिंझोड़ा और वह ज़ोर से चिल्लाती हुई उसमें से निकल गयी।

²⁷ हर व्यक्ति चकित हो उठा। इतना चकित, कि सब आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, “यह क्या है? अधिकार के साथ दिया गया एक नया उपदेश! यह दुष्टात्माओं को भी आज्ञा देता है और वे उसे मानती हैं।” ²⁸ इस तरह गलील और उसके आसपास हर कहीं यीशु का नाम जल्दी ही फैल गया।

- मरकुस 1:23-28

एक अशुद्ध आत्मा एक दानव है, जो पवित्रता से रहित है। आत्मा बोलती है; मनुष्य आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है। यह घटना हमें दानवों के बारे में कुछ जानकारी देती है: उनके पास व्यक्तित्व है - यह स्वयं को व्यक्त करता

है, उनके पास बुद्धि है - यह यीशु के बारे में जानता था, उनके पास शक्ति है - यह मनुष्य पर अधिकार करता था, उनके पास इच्छा है - यह कुछ चाहता था।

यीशु इसकी गवाही स्वीकार करने से इंकार करते हैं क्योंकि दानव इसे करने के योग्य नहीं हैं। इसे अनुमति देने से लोगों को यह समझने में भ्रम होगा कि यीशु कौन हैं (वे दानवों के नेता नहीं हैं)।

केवल एक आदेश से यह दानव हट जाता है। कोई जादू-टोना, औषधि, रोशनी, चिल्लाना, चालाकी, सौदा (इसे हराने के लिए भगवान को कुछ देना या प्रस्तावित करना) नहीं। यीशु केवल अधिकार के साथ आदेश देते हैं और दानव बिना लड़ाई या शब्द के आज्ञाकारी होता है।

लोग आश्चर्यचकित हैं, वही प्रतिक्रिया जो उन्होंने उसकी शिक्षा सुनते समय दी थी। वे आश्चर्यचकित हैं क्योंकि वह शक्ति (पूर्ण रूप से व्यक्त सत्य) के साथ शिक्षा देता है, और वह केवल एक आदेश से सबसे क्रूर दानव को परास्त करता है।

पतरस की सास को चंगा करता है

²⁹ फिर वे आराधनालय से निकल कर याकूब और यूहन्ना के साथ सीधे शमौन और अन्धियास के घर पहुँचे। ³⁰ शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी इसलिए उन्होंने यीशु को तत्काल उसके बारे में बताया।

³¹ यीशु उसके पास गया और हाथ पकड़ कर उसे उठाया। तुरंत उसका ज्वर उतर गया और वह उनकी सेवा करने लगी।

- मरकुस 1:29-31

पीटर एक विवाहित पुरुष हैं (1 कुरिन्थियों 9:5). बीमार महिला तुरंत ठीक हो जाती है और सेवा करने लगती है। यह एक क्षण में पूर्ण चिकित्सा को दर्शाता है (वह तुरंत इतनी स्वस्थ हो जाती है कि मेहमानों से भरे घर की सेवा कर सके)।

पतरस के घर आने वाले सभी को चंगा करता है

³² सूरज डूबने के बाद जब शाम हुई तो वहाँ के लोग सभी रोगियों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को उसके पास लाये। ³³ सारा नगर उसके द्वार पर उमड़ पड़ा। ³⁴ उसने तरह तरह के रोगों से पीड़ित बहुत से लोगों को चंगा किया और बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया। क्योंकि वे उसे जानती थीं इसलिये उसने उन्हें बोलने नहीं दिया।

- मरकुस 1:32-34

यह चंगाई के चमत्कारों की एक बड़ी संख्या का संक्षिप्त वर्णन है। यीशु अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रार्थना में retreat करते हैं। सेवा ऊर्जा को कम कर देती है और प्रार्थना उसे पुनः स्थापित करती है, जो प्रेरितों के साथ-साथ आज के सेवकों के लिए भी एक अच्छा पाठ है।

शिक्षा और पुष्टि करने वाले चमत्कारों का संयोजन

³⁵ अँधेरा रहते, सुबह सवेरे वह घर छोड़ कर किसी एकांत स्थान पर चला गया जहाँ उसने प्रार्थना की। ³⁶ किन्तु शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले ³⁷ और उसे पा कर बोले, “हर व्यक्ति तेरी खोज में है।”

³⁸ इस पर यीशु ने उनसे कहा, “हमें दूसरे नगरों में जाना ही चाहिये ताकि वहाँ भी उपदेश दिया जा सके क्योंकि मैं इसी के लिए आया हूँ।” ³⁹ इस तरह वह गलील में सब कहीं उनकी आराधनालयों में उपदेश देता और दुष्टात्माओं को निकालता गया।

- मरकुस 1:35-39

यीशु की शिक्षाओं ने उनकी पहचान और आज्ञाओं को स्थापित किया, उनके चमत्कार उनके अधिकार और शक्ति की पुष्टि के लिए किए गए। स्पष्ट रूप से उस समय दानव कब्जा एक बड़ी समस्या थी और एक ऐसी समस्या थी जिसने उन्हें हैरान कर दिया था, यीशु इसका उपयोग अपनी शक्ति दिखाने के लिए करते हैं।

कुष्ठ रोगी को चंगा करता है

⁴⁰ फिर एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने उसके सामने झुक कर उससे विनती की और कहा, “यदि तू चाहे, तो तू मुझे ठीक कर सकता है।”

⁴¹ उसे उस पर गुस्सा आया और उसने अपना हाथ फैला कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो जाओ!” ⁴² और उसे तत्काल कोढ़ से छुटकारा मिल गया। वह पूरी तरह शुद्ध हो गया।

⁴³ यीशु ने उसे कड़ी चेतावनी दी और तुरन्त भेज दिया। ⁴⁴ यीशु ने उससे कहा, “देख इसके बारे में तू किसी को कुछ नहीं बताना। किन्तु याजक के पास जा और उसे अपने आप को दिखा। और मूसा के नियम के अनुसार अपने ठीक होने की भेंट अर्पित कर ताकि हर किसी को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।” ⁴⁵ परन्तु वह बाहर जाकर खुले तौर पर इस बारे में लोगों से बातचीत करके इसका प्रचार करने लगा। इससे यीशु फिर कभी नगर में खुले तौर पर नहीं जा सका। वह एकांत स्थानों में रहने लगा किन्तु लोग हर कहीं से उसके पास आते रहे।

- मरकुस 1:40-45

कोढ़ एक दुखद बीमारी थी। यह शारीरिक रूप से कमजोर करने वाली थी क्योंकि रोगी विभिन्न चरणों में गिरते थे जहाँ त्वचा और शरीर के अंगों में घाव हो जाते थे, सूख जाते थे, यहाँ तक कि गिर भी जाते थे। यह सामाजिक रूप से भी विकलांग करने वाली थी। कोढ़ी को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं थी, वे अपने पूरे जीवन क्वारंटीन में रहते थे और सार्वजनिक स्थान पर होते समय अपने मुँह पर हाथ रखकर “अशुद्ध” चिल्लाना पड़ता था।

इस कुछ रोगी को यीशु की शक्ति पर महान विश्वास था और इसलिए, वह यीशु के पास ठीक होने के लिए आया। यीशु ने उसे छुआ (जो अनुमति नहीं थी) और वह व्यक्ति ठीक हो गया। यीशु ने न केवल उसकी बीमारी को ठीक किया, बल्कि ऐसा करते हुए उसकी आत्म-सम्मान को भी ठीक किया।

यीशु उससे कहता है कि वह अपने चंगाई को पुरोहितों द्वारा पुष्टि और प्रमाणित कराए इससे पहले कि वह बताए कि यह कैसे हुआ (इस रोग से चंगाई के संबंध में कानून के अनुसार, लैव्यव्यवस्था 14:2). पुरोहितों को चंगाई की पुष्टि करने का दायित्व दिया गया था ताकि सामान्य समाज में लौटने की अनुमति दी जा सके। साथ ही, ऐसा करने से यह यीशु के लिए एक वैध चंगाई और चमत्कार का साक्ष्य प्रदान करेगा।

आदमी इतना उत्साहित था कि वह इंतजार नहीं कर सका और ऐसा करते हुए उसने जनता के बीच हलचल मचा दी, इस हद तक कि यीशु अब भीड़-भाड़ वाले इलाकों में बिना भीड़ के नहीं जा सकते थे। इस चमत्कार के परिणामस्वरूप यीशु ने स्वयं को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित किया जिसने अधिकार के साथ बोला और शक्ति प्रदर्शित की। लोग अब उनके पास आ रहे थे यह देखने के लिए कि उन्होंने क्या किया, और सुनने के लिए कि उन्होंने क्या कहा।

अगले भागों में हम देखेंगे कि यीशु इस प्रदर्शन को जारी रखते हैं, लेकिन इस बिंदु पर उनके विरोध में वृद्धि होगी और वे हमला करना शुरू कर देंगे।